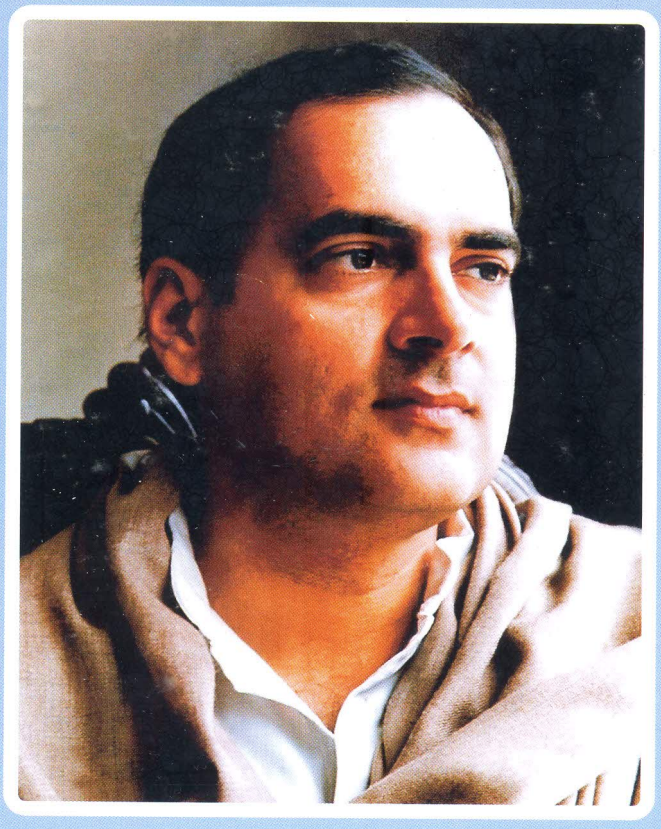

राजीव गांधी

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली
2019

राजीव गांधी

हमारे इतिहास के पन्नों में राजीव गांधी का नाम एक ऐसे दूरदर्शी नेता के रूप में अंकित है जिन्होंने बहुत ही कम समय में विभिन्न मुद्दों पर राष्ट्र की मानसिकता को पूर्णत: बदल दिया और लोगों का अगाध विश्वास जीता। असाधारण साहस, सहनशक्ति, विवेक, समर्पण और दृढ़ विश्वास के धनी, श्री राजीव गांधी हमारे राष्ट्रीय जीवन पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ गये। राजीव गांधी भारतीय राजनीति में खुली सोच और नया दृष्टिकोण लेकर आये और इन महान गुणों के साथ उन्होंने अपने तीक्ष्ण राजनैतिक अन्तर्ज्ञान के स्वाभाविक गुण को भी संसक्त कर लिया। भारत के सामाजिक-धार्मिक बहुलवाद और इसकी अद्वितीय सभ्यता की विरासत के प्रति उनकी गहरी समझ एक और ऐसा गुण था जिसने अनेक बुराइयों से पीड़ित देश की जनता को उनसे उबारने के लिए उनकी राजनीतिक इच्छाशक्ति के प्रेरकतत्व के रूप में कार्य किया।

श्री राजीव गांधी का जन्म श्री फिरोज गांधी और श्रीमती इन्दिरा गांधी के यहां 20 अगस्त 1944 को बाम्बे* में हुआ। वर्ष 1950 में जब राजीव गांधी की आयु छह वर्ष की थी, तब वह दिल्ली चले गये और पंडित जवाहरलाल नेहरू के पास रहने लगे। शीघ्र ही, श्री राजीव गांधी को देहरादून में वेलहम्स स्कूल में दाखिल करा दिया गया। तद्नंतर, 1955 में उन्होंने प्रतिष्ठित दून स्कूल में पढ़ाई आरम्भ कर दी। तत्पश्चात्, वर्ष 1962 में राजीव गांधी कैम्ब्रिज चले गये और ट्रिनिटी कॉलेज में दाखिला लिया। वहां से उन्होंने लन्दन में ''इम्पीरियल कॉलेज ऑफ साइंस एंड टैक्नोलॉजी'' में पढ़ाई की। कैम्ब्रिज में अपनी पढ़ाई के दौरान राजीव की इटली की मिस सोनिया मैनों से मुलाकात हुई जिनसे उन्होंने वर्ष 1968 में विवाह किया।

भारत वापस लौटने पर राजीव गांधी ने दिसम्बर 1967 में हैदराबाद स्थित इंडियन एयरलाइंस के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया और बाद में वह 5 मई 1968 को इंडियन एयरलाइंस में एक प्रशिक्षणार्थी के रूप में भर्ती हुए तथा 1980 में बोइंग कमान्डर लाइसेंस प्राप्त करने से पूर्व एच.एस.-748 प्रकार के विमानों के कप्तान के रूप में कार्य किया।

यद्यपि राजीव गांधी 1, सफदरजंग रोड, जो उनकी माता श्रीमती इन्दिरा गांधी और प्रधान मंत्री का सरकारी आवास था, में रहते थे, फिर भी उन्होंने राजनीति से स्वयं को दूर रखा। तथापि, राजनीति में सक्रिय उनके भाई संजय गांधी की जून 1980 में, आकस्मिक मृत्यु हो जाने से संपूर्ण परिदृश्य ही बदल गया। अन्तत: राजीव गांधी ने अपने मनचाहे व्यवसाय में उज्ज्वल

*अब मुम्बई के नाम से जाना जाता है।

भविष्य का त्याग कर दिया और राजनीति में कूद पड़े तथा जून 1981 में अमेठी निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा का चुनाव लड़ा और वहां भारी बहुमत से जीते। शीघ्र ही वह पार्टी के कार्य में सक्रिय हो गए। उन्हें 3 फरवरी 1983 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (इंदिरा) [ए.आई.सी.सी. (आई.)] का महासचिव नियुक्त किया गया। इसके साथ-साथ, उन्हें कांग्रेस सेवा दल, युवक कांग्रेस (आई.), भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन तथा महिलाओं, छात्रों, युवकों और अल्पसंख्यकों से संबंधित अन्य अनेक संगठनों के कार्य-संचालन की जिम्मेदारी दी गई।

दिनांक 31 अक्तूबर 1984 को श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशंस हत्या के बाद राजीव गांधी ने भारत के प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की। व्यक्तिगत त्रासदी तथा इससे उपजी स्थितियों का सामना करने में उनके द्वारा दिखाई गई सहनशक्ति, मर्यादा और संयम के फलस्वरूप संपूर्ण राष्ट्र सांत्वना एवं आश्वासन के लिए उनकी ओर उन्मुख हुआ।

राजीव गांधी सच्चे अर्थों में दूरदर्शी और आधुनिक नेता थे जो अपनी खुली सोच के साथ नये विचारों को अपनाने के लिए सदैव तैयार रहते थे। शासन की बागडोर संभालने के तुरन्त बाद, उन्होंने देश के समक्ष विद्यमान चुनौतियों का संयमपूर्वक सामना किया तथा देश में एक नई ऊर्जा का संचार करने का संकल्प लिया। दिसम्बर 1984 में आठवें आम चुनाव में उनके नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी को 401 सीटें मिलीं जो एक अभूतपूर्व सफलता थी, जनमत का इससे अधिक प्रतिशत पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ था।

राजीव गांधी को यह विश्वास था कि भारत का भविष्य प्रौद्योगिकीय आधुनिकीकरण, उच्च उत्पादकता और सामाजिक न्याय के तीव्र विस्तार पर निर्भर है। अपने साथ भारी जनमत लेकर उन्होंने सातवीं पंचवर्षीय योजना में खाद्य उत्पादन, रोजगार सृजन और उत्पादन वृद्धि को प्राथमिकता दी और भारतीय अर्थव्यवस्था के संपूर्ण विकास के एक नए युग का सूत्रपात किया, ताकि गरीबी हटायी जा सके और सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि की जा सके।

राजीव गांधी ने कृषि के द्रुत और समग्र विकास की आवश्यकता पर बल दिया जिसके लिए अन्य इलाकों में हरित क्रांति लागू करने की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने तिलहनों से संबंधित प्रौद्योगिकी मिशन और दलहन संबंधी राष्ट्रीय परियोजना के माध्यम से शुष्क खेती के विकास को एक नई गति प्रदान की। सातवीं पंचवर्षीय योजना में उन्होंने कृषि पर अधिक बल दिया। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में खाद्यान्नों का रिकार्ड उत्पादन हुआ जिसने पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिये। राजीव गांधी ने उच्च वृद्धि दर प्राप्त करने हेतु औद्योगिक नीति को नई दिशा और गुणवत्ता प्रदान करते हुए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन देने हेतु उद्योग में उत्पादक शक्तियों को नई प्रेरणा भी दी।

राजीव गांधी द्वारा प्रौद्योगिकी पर बल देने की बात इस तथ्य से पता चलती है कि उन्होंने दूरसंचार, तिलहन, प्रतिरक्षण, पेयजल और निरक्षरता के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी मिशनों की स्थापना की। उन्होंने जाति, पंथ और

लैंगिक भेद में जकड़ी हुई स्वयं को निर्बल करने वाली पारंपरिक सोच के दलदल से देश को बाहर निकालने हेतु जी-जान से प्रयास किया। उन्होंने गरीबी, शोषण तथा औपनिवेशिक दासता के अतीत के बोझ से मुक्त देश के रूप में भारत को 21वीं सदी में ले जाने का सपना संजोया था। इसलिए, उन्होंने भ्रष्टाचार, अक्षमता और नौकरशाही की प्रक्रियात्मक जटिलताओं पर सीधा प्रहार शुरू किया तथा एक ईमानदार, मानवीय, कार्यकुशल और स्वच्छ प्रशासन देने के लिए तहेदिल से कार्य किया। राजीव गांधी ने एक नयी कार्य-संस्कृति का सूत्रपात किया जिसमें कार्मिक की मांगों का ही नहीं बल्कि उसके कार्य संबंधी वातावरण तथा आधारभूत आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा गया था। शिद्दत के साथ यह महसूस करके कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की कुंजी प्रशासनिक सुधारों में निहित है, उन्होंने कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग को सीधे अपने नियंत्रण में ले लिया तथा प्रशासनिक संगठन, नीतियों और प्रक्रियाओं की निरंतर पुनरीक्षा करते रहे।

कार्यकुशलता वृद्धि में, उत्पादकता वृद्धि में और डिजाइनों की परिकल्पना करने में कम्प्यूटर की बहुआयामी भूमिका से अत्यधिक प्रभावित होकर उन्होंने एक नई कम्प्यूटर नीति लागू की जिसने कम्प्यूटरों के स्वदेश में निर्माण तथा कार्यालयों, विद्यालयों, बैंकों और मानवीय गतिविधियों के अनेक क्षेत्रों में उनके उपयोग को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया। उनका यह भी मत था कि भारत अपने यहां उपलब्ध कुशल श्रमिकों का सही रूप से उपयोग करके "साफ्टवेयर" के उत्पादन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकता है।

राजीव गांधी का एक अन्य महत्वाकांक्षी और परिवर्तनशील कार्यक्रम था—पंचायती राज प्रणाली को संवैधानिक दर्जा प्रदान करके सत्ता को विकेन्द्रित करना। वह यह जानते थे कि जनता के कल्याण के लिये निर्धारित धनराशि का एक अंश मात्र ही लक्षित वर्ग तक पहुंच रहा है, उसकी शेष राशि भ्रष्टाचार तथा प्रशासनिक अक्षमता के कारण बीच में ही हड़प ली जाती है। इसलिए वह पंचायती राज और नगरपालिका विधेयकों के माध्यम से जनता में आर्थिक शक्ति का बंटवारा करना चाहते थे। यह उनकी इस दृष्टि का पर्याप्त प्रमाण है कि सरकार की भागीदारीपूर्ण और लोकतांत्रिक प्रणाली अत्यधिक ऊर्जा का संचार करेगी, शासन को स्व-शासन के आदर्शों के निकट लायेगी और समाज के दलित और उपेक्षित वर्गों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन सुनिश्चित करेगी।

राजीव गांधी ने यह महसूस किया कि भारत की जनता को न्याय दिलाने में अत्यधिक विलंब एक प्रकार से उसे न्याय दिलाने से वंचित करने जैसा है। वह यह भी जानते थे कि न्यायालयों पर मुकदमों का अत्यधिक बोझ है। न्यायालयों का बोझ हल्का करने की दृष्टि से उन्होंने लोक अदालतों के माध्यम से न्याय-व्यवस्था को और आगे बढ़ाया जिससे मुकदमों के निपटान में तेजी आई। इसके अतिरिक्त राजीव गांधी ने उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की संख्या में भी वृद्धि की और उपयुक्त समय-सीमा के भीतर इन न्यायालयों में रिक्तियों को भरने

के लिए कदम उठाये ताकि मुकदमों का शीघ्रता से निपटारा किया जा सके। प्रशासनिक न्यायाधिकरणों की स्थापना करके उन्होंने सरकारी कर्मचारियों की शिकायतें दूर करने का भी एक नया माध्यम प्रदान किया।

राजीव गांधी कुशासन और कार्यकरण की विफलता की अत्यधिक आलोचना करते थे। उन्होंने राजनैतिक पतन को रोकने हेतु पहल करके शीर्ष स्तर से कार्यवाही आरंभ की। राजनैतिक दल-बदल को समाप्त करने के लिए संविधान (52वां संशोधन) अधिनियम, 1985, जिसे आमतौर पर दल-परिवर्तन रोधी कानून के नाम से जाना जाता है, अधिनियमित किया गया। उनके द्वारा उठाया गया दूसरा महत्वपूर्ण कदम था—कंपनी (संशोधन) अधिनियम, 1985 जिसके द्वारा कंपनियों को राजनैतिक दलों को कुछ शर्तों के अध्यधीन दान देने की अनुमति दी गई।

राजीव गांधी का युवाओं पर गहरा विश्वास था और उन्हें राष्ट्र निर्माण के कार्य में युवाओं से बड़ी आशाएं थीं। भारतीय युवाओं में राजनैतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी की भावना जगाने के उद्देश्य से संविधान में संशोधन करके मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई। इस संशोधन, जिसके माध्यम से मतदाताओं की संख्या में 5 करोड़ की वृद्धि हो गई, ने रातों रात हमारे मतदाता वर्ग की स्थिति बदल दी।

राजीव गांधी को भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं पर बड़ा गर्व था और उन्होंने हर अवसर पर उन प्राचीन मूल्यों और ज्ञान को मन में बिठाने की आवश्यकता पर जोर दिया जिनके लिए भारत जाना जाता रहा है। हालांकि, वह आधुनिकीकरण के प्रबल समर्थक थे लेकिन वह यह कभी नहीं चाहते थे कि भारत धर्मनिरपेक्षता, सहनशीलता, अहिंसा और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व जैसे मूल्यों पर आधारित उन प्रथाओं, परम्पराओं से विचलित हो जाए जिनसे हमारे देश में विविध सांस्कृतिक परम्पराएं फलीं-फूलीं। भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और उसे विशिष्टता प्रदान करने के संबंध में उनकी अभिरुचि, नई शिक्षा नीति तथा विश्व के विभिन्न भागों में भारत-उत्सवों के आयोजन में परिलक्षित होती है। राजीव जी की कला और संस्कृति में रुचि ने उन्हें सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित करने हेतु प्रेरित किया, जिससे न केवल अंतर्राज्यीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सहायता मिली बल्कि इससे आम आदमी को भी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानने का मौका मिला।

राजीव गांधी पर्यावरण-प्रदूषण तथा मानव सभ्यता पर इसके घातक प्रभाव की समस्या से बहुत चिन्तित थे। गंगा नदी की सफाई का कार्यक्रम आरम्भ कर तथा राष्ट्रीय परती भूमि विकास बोर्ड की स्थापना करके उन्होंने पर्यावरण के प्रति अपनी गहरी चिन्ता प्रकट की। राजीव गांधी ने पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकी सबको उपलब्ध कराने तथा ऐसी प्रौद्योगिकी के अनुसंधान व विकास हेतु धन उपलब्ध कराने के लिए विश्वव्यापी प्रयासों का आह्वान किया। इन सब उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में पृथ्वी संरक्षण कोष (प्लेनेट प्रोटेक्शन फंड) की स्थापना का प्रस्ताव रखा जिसका महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुकूल प्रौद्योगिकी का विकास

करने अथवा इसे खरीदकर पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए उपयोग किया जा सके और जिसे बाद में विकासशील तथा विकसित, दोनों तरह के देशों के लाभार्थ जन-जन तक पहुंचाया जा सके।

जहां तक भारत की विदेश नीति का संबंध है, राजीव गांधी ने अपने देश की एकता, अखंडता तथा सिद्धांतों से समझौता किए बिना अपने पड़ोसी देशों से संबंध सुधारने को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने तमिलों के जीवन तथा सम्पत्ति की रक्षा तथा श्रीलंका की भौगोलिक एकता तथा राष्ट्रीय अखण्डता को सुदृढ़ करने हेतु भारत-श्रीलंका समझौते पर नेक इरादों से हस्ताक्षर किए। अपने पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध बनाने की इसी इच्छा से उन्होंने 1988 में अपदस्थ मालदीव सरकार को आपात सहायता भेजी और उसी वर्ष बांग्लादेश के बाढ़ पीड़ित लोगों को राहत सहायता भेजी। राजीव गांधी ने पाकिस्तान के साथ विस्तृत बातचीत के लिए भी पहल की और दोनों देशों के लोगों के मध्य मित्रता और आपसी समझ-बूझ को बढ़ाने के लिए जनसम्पर्क कार्यक्रमों में गहरी दिलचस्पी ली। यह विश्वास रखते हुए कि दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) को सुदृढ़ बनाना इस क्षेत्र के देशों की अधिकतर समस्याओं के समाधान में अत्यधिक सहायक सिद्ध होगा, उन्होंने ''दक्षेस'' के सदस्यों के बीच लगातार सहयोग कायम रखने के लिए प्रयास किए।

राजीव गांधी ने द्वंद्व और तनाव से मुक्त विश्व की कल्पना की, जहां शंकापूर्ण वातावरण के स्थान पर आपसी विश्वास और सहयोग हो और जहां आतंक के स्थान पर विधिसम्मत हितों का संवर्धन हो। उन्होंने निरस्त्रीकरण के मुद्दे को गांधीजी की अहिंसा की नीति का न्यायसंगत विकास माना तथा अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को निभाने में इस नीति का पालन किया। इस प्रकार सत्ता संभालने के शीघ्र बाद उन्होंने शांति स्थापना के लिए छह राष्ट्रों की पहल को परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए जारी रखा। हथियारों की दौड़ की निरर्थकता को समझकर राजीव गांधी ने ऐतिहासिक दिल्ली घोषणा में, जिस पर उन्होंने मिखाइल गोर्बाचोव के साथ हस्ताक्षर किए, महाविनाशकारी हथियारों से मुक्त विश्व तथा युद्धविहीन विश्व की स्थापना के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि की। इसके परिणामस्वरूप, निरस्त्रीकरण तथा हथियार नियंत्रण के प्रक्रियागत विश्वस्तरीय प्रयासों को बहुत प्रोत्साहन दिया गया। वर्ष 1988 में राजीव गांधी ने संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा के निरस्त्रीकरण पर विशेष अधिवेशन में एक कार्य-योजना प्रस्तुत की, जो समानता, न्याय और अहिंसा पर आधारित शांतिपूर्ण और परमाणु हथियार-रहित विश्व बनाने की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम था।

दक्षिण-दक्षिण सहयोग को जीवन्त बनाने के साथ ही राजीव गांधी ने उत्तर-दक्षिण वार्ता को पुनः शुरू करने के लिए ईमानदारीपूर्वक कार्य किया। उनके लिए ये दोनों एक-दूसरे से संबद्ध थे। जहां उन्होंने उत्तर-दक्षिण वार्ता पुनः आरम्भ करके वर्तमान अन्यायपूर्ण और असमान अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन करने की आवश्यकता पर जोर दिया वहीं उन्होंने

विकासशील देशों से पृथक और सामूहिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया।

राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय मामलों में बहुपक्षीय व्यवस्था में गहरा विश्वास रखते थे और बहुपक्षीय व्यापार वार्ताओं को सफल बनाने के लिए सतत् प्रयास करते रहे जिसका उद्देश्य सभी देशों का विकास था। विश्व में आर्थिक स्थायित्व लाने और विकास की गति को तेज करने के लिए उन्होंने बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था की अत्यावश्यकता महसूस की। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के अध्यक्ष के तौर पर राजीव गांधी ने विश्व मामलों में हमेशा गुटनिरपेक्ष आंदोलन को मजबूत करने का प्रयास किया। उन्होंने अस्सी के दशक में तीव्र गति से बदलती हुई परिस्थितियों में एक नई दिशा प्रदान कर गुटनिरपेक्ष आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान किया।

राजीव गांधी विश्व के किसी भी भाग में हो रहे दमन और शोषण के खिलाफ संघर्ष के प्रतीक थे, चाहे यह दमन दक्षिण अफ्रीका में हो, नामीबिया में हो अथवा फिलीस्तीन में हो। उन्होंने रंगभेद की इस अमानवीय नीति के खिलाफ एक अनवरत जंग छेड़ी जिसके बारे में उन्हें विश्वास था कि अंततः इसे उखाड़ फेंका जाएगा। उनके लिए, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ चल रहा संघर्ष भारत के स्वतंत्रता संग्राम का ही एक रूप था और वह मानते थे कि जब तक यह अमानवीय प्रणाली उखाड़ कर नहीं फेंकी जाती और लोगों को न्याय नहीं मिलता तब तक न तो भारतीयों को और न ही विश्व के लोगों को वास्तविक आजादी मिल सकती है। उन्होंने नासाऊ में हुई राष्ट्रमंडल देशों के अध्यक्षों की बैठक में दक्षिण अफ्रीका में जाति-भेद पर आधारित शासन प्रणाली के विरुद्ध उठाए जाने वाले कदमों पर सर्वसम्मति कायम करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने आक्रमण, उपनिवेशवाद और रंगभेद का प्रतिरोध करने के लिए 'फ्रन्टलाइन स्टेट्स' के सहायतार्थ 'अफ्रीका फन्ड' (अफ्रीका निधि) स्थापित करवाने में एक माध्यम का काम किया। इस प्रकार, दक्षिण अफ्रीका के लोगों के लिए मानव अधिकारों और मानव गरिमा की बहाली उनका एक प्रमुख उद्देश्य था।

राजीव गांधी की संसदीय लोकतंत्र की प्रभावकारिता में दृढ़ आस्था थी और उनका विश्वास था कि धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवाद के युग्म सिद्धांतों पर आधारित भारतीय लोकतंत्र का प्रारूप और पद्धति विकास हेतु सर्वश्रेष्ठ है। संसद में आने से पूर्व वह हमेशा पूरी तैयारी करके आते थे और सभी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर संसद के माध्यम से सम्पूर्ण देश को विश्वास में लेते थे। यद्यपि, 1989 के आम चुनावों में उनकी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, तथापि उन्होंने लोक सभा में विपक्ष के उत्तरदायी नेता का कार्य करना श्रेयस्कर समझा। राजीव गांधी ने विपक्ष के नेता की भूमिका का गौरवपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाह किया।

राजीव गांधी के घटनापूर्ण सार्वजनिक जीवन का 21 मई 1991 को उस समय अचानक अंत हो गया जब चेन्नै के पश्चिम में एक छोटे से शहर श्रीपेरुम्बुदूर में उनकी हत्या कर दी गई जहां वह दसवीं लोक सभा के आम चुनावों में अपनी पार्टी के चुनाव अभियान के दौरान एक चुनाव सभा को

सम्बोधित करने गए थे। सम्पूर्ण राष्ट्र, संसद, राज्य विधानमण्डलों, जनजीवन के सभी क्षेत्रों के नेताओं, कोटि-कोटि अनुयायियों और प्रशंसकों तथा विदेशी गण्यमान्य व्यक्तियों ने इस दूरदर्शी नेता, जिसने 21वीं सदी की ओर अग्रसर इस राष्ट्र का कुशलतापूर्वक मार्गनिर्देशन किया था, की दु:खद एवं आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रकट किया।

राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन ने अपने शोक संदेश में श्री राजीव गांधी को ''भारत का एक निष्ठावान बहादुर सपूत'' बताया।

राजीव गांधी की हत्या पर शोक प्रकट करते हुए लोक सभा ने निम्नलिखित संकल्प पारित किया:

''यह सभा हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी की कपटपूर्ण ढंग से की गई नृशंस हत्या पर गहरा दु:ख प्रकट करती है। कुछ ऐसे मूढ़ तत्वों द्वारा जानबूझकर हिंसा तथा नफरत का वातावरण बनाया गया है जिन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं है और जो निरंतर देश की एकता तथा अखंडता के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। ऐसे ही तत्वों ने शांति तथा अहिंसा के एक और ऐसे योद्धा की उसी तरह जान ले ली जैसे सात वर्ष पूर्व उनकी पूज्य मां की जान ली थी। वह ऐसे महान व्यक्ति थे जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान करना उचित समझा, न कि देश की उस आम जनता से दूर रहना, जो उन्हें बेहद प्यार करती थी। देश के इतिहास की इस महत्वपूर्ण घड़ी में श्री राजीव गांधी के हमसे बिछुड़ जाने से हमारा देश एक नौजवान तथा चामत्कारिक नेता की सेवाओं से वंचित हो गया है। वह एक ऐसे नेता थे जिनसे हमारी पददलित जनता को बहुत आशाएं थीं और अपने बेहतर तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए उन पर अटूट विश्वास था।''

राज्य सभा ने भी राजीव गांधी के दु:खद निधन पर शोक व्यक्त किया और निम्नलिखित संकल्प पारित किया:

''यह सभा विश्व के ऐसे महान नेता श्री राजीव गांधी के निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है जिन्होंने भविष्य का आकलन करने वाली अपनी दूरदृष्टि, अदम्य साहस और संकल्पशक्ति के द्वारा एक अभिनव भारत के निर्माण के पुनीत कार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था। यह एक ऐसे अभिनव भारत के निर्माण का कार्य था जिसके द्वारा स्वतंत्रता के महान संग्राम में सहभागी हमारी अनेक पीढ़ियों के देशभक्तों के इस सपने को साकार किया जाना था कि हमारा भारत एक ऐसा शक्तिशाली, एकजुट, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील देश बने जो एकता और संश्लेषण की युगमान्य जीवन शैली की अपनी विशिष्ट कला के द्वारा विकसित होकर आधुनिक बने और एक श्रेष्ठ तथा अधिक मानवीय विश्व-परिवेश के निर्माण में अपना योगदान दे।

यह सभा उस गहरे आघात और संताप को व्यक्त करती है जो श्री राजीव गांधी की हत्या के फलस्वरूप देश का एक सपूत छिन जाने से हमारे राष्ट्र को और विश्व भर के लोगों को पहुंचा है।''